International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2017; Page No. 53-54

प्रयोजनमूलक हिंदी की शैली : एक विश्लेषण

Dr. Jino P Varughese

Assistant Professor, Department of Hindi, Mar Thoma College, Chungathara, Kerala, India

सरांश

विश्व में विज्ञान और प्रौघोगिकी का अभूतपूर्व विकास हो रहा है। साथ ही साथ भारत में भी इसकी लहर फैल रही है। ज्ञान – विज्ञान और ततसंबन्धी अन्य क्षेत्रों की सही अभिव्यक्ति केलिए भाषा में भी प्रायोगिक स्तर पर विकास होना अनिवार्य है। हिंदी भाषा इसके लिए एक उत्तम उदाहरण है कि यह समस्त क्षेत्रों की सार्थक अभिव्यक्ति केलिए सक्षम है। फलस्वरूप हिंदी भाषा के प्रयोगधर्मी रूप प्रयोजनमूलक हिंदी सामने आयी और इसके विविध शैली रूप विकसित हुई। विज्ञान प्रधान इस युग में प्रयोजनमूलक हिंदी की शैली रूप पर चर्चा आवश्यक हो गई है यह इसके संबन्ध में एक अवलोकन है।

मूल शब्द: विज्ञान, प्रौघोगिकी, हिंदी।

प्रस्तावना

भारतीय संदर्भ में हिंदी सामासिक संस्कृति (Composite Culture) की अभिव्यक्ति है। अंतर्राष्ट्रीय फलक पर हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने की दिशा में देश-विदेश के विद्वान, शिक्षक, भाषा – वैज्ञानिक और हिंदी सेवी संस्थाएँ निरन्तर प्रयत्नशील हैं। दुनिया भर में हिंदी भाषा के प्रति ममता की भावना बढ़ रही है और हिंदी सीखने-सिखाने की मॉग बढ़ रही हैं। इस संदर्भ में प्रयोजनमूलक हिंदी की शैली संबन्धी अध्ययन की अहमियत है। 'प्रयोजनमूलक हिंदी' – भाषा के आधुनिक युग की आर्थिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक और प्रशासनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से हुआ हैं। यह हिंदी भाषा का एक नूतन एवं बहु उपयोगी तथा बहु आयामी विधा है। 'प्रयोजनमूलक हिंदी '(Functional Hindi) भाषा विज्ञान (Linguistics) की श्रेष्ठ शाखा 'अनुप्रयुक्त- भाषा विज्ञान' (Applied Linguistics) के भीतर एक नूतन उपशाखा के रूप में वृद्धि प्राप्त हो रही हैं। हिंदी भाषा विभिन्न क्षेत्रों में हमारी ज़रूरतों की पूर्ति के लिए जब प्रयुक्त की जाती है, तब वह प्रयोजनमूलक हिंदी बनती है। इसका प्रयुक्ति – क्षेत्र तथा व्याप्ति प्रशासन – परिचालन, टेक्नॉलजी एवं ज्ञान – विज्ञान के क्षेत्रों तक फैला हुआ हैं। इन क्षेत्रों में हिंदी भाषा के भिन्न-भिन्न शैली रूप व्यवहृत हैं। ये शैली रूप हिंदी भाषा विकास के स्पष्ट प्रमाण है। साहित्य से लेकर सामाजिक क्षेत्र तक यह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

प्रयोजनमूलक हिंदी की शैली

हिंदी अथवा कोई भी भाषा भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं केलिए भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ निभाती है तब उसकी शैली भिन्न-भिन्न रूप धारण करती है। इसके संबन्ध में प्रोफसर चितरंजन कर का अभिमत उल्लेखनीय है –" हिंदी अथवा कोई भी भाषा जब भिन्न-भिन्न प्रयोजनों के लिए भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ निभाती है तब उसकी शैली भी एक सी नहीं रहती। तात्पर्य यह है कि संदर्भ भेद शैली भेद को जन्म देता है।" 1 पारिभाषिक-शब्दावली में भी यह भेद प्रकट होता है। अत: विभिन्न प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त हिंदी के भिन्न रूपों को प्रयोजनमूलक हिंदी की शैली कहा जाता है। आगे इन शैली रूपों का परिचय प्रस्तुत हैं :-

1. साहित्यिक हिंदी की शैली (Style of Hindi Literature)

साहित्य में कविता, कहानी, उपन्यास,निबन्ध आदि अनेक स्तरों पर हिंदी का प्रयोग हो रहा है। इस हिंदी का अभिव्यक्ति का पक्ष सुंदर, गरिमामय एवं आकर्षक है। हिंदी के मुख्य तीन साहित्यिक शैली स्वीकृत हैं – संस्कृतनिष्ठ हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी। इसके अलावा अन्य एक शैली रूप भी आज प्रचलित है, वह है हिंदी - अंग्रेज़ी मिश्रित शैली याने' हिंग्लिश'। साहित्य में प्रचलित हिंदी के इन चार शैली रूपों को साहित्यिक हिंदी की शैली कहा जाता हैं।

2. प्रशासनिक हिंदी की शैली (Administrative Hindi Style)

प्रशासनिक हिंदी की शैली सरकारी कामकाज और प्रशासन के क्षेत्र में प्रयुक्त है। यह हिंदी मुख्य रूप से सरकारी पत्र व्यवहार, सरकारी रिपोर्ट, सरकारी विज्ञापन, टिप्पणी लेखन, मसौदा लेखन, प्रतिवेदन, संक्षेपण, नियमों-अधिनियमों, संकल्पों केलिए प्रयोग किया जाता है। इस शैली में भावुकता, कोमलता, मुहावरे-कहावतें तथा अन्य कौशल आदि का प्रयोग वर्जित है। लेकिन इसमें निर्वयक्तिकता, तटस्थता तथा तथ्यपरकता आदि अनिवार्य हैं। इसमें पारिभाषिक शब्दावली तथा तकनीकी शब्दावली का स्थान अद्वितीय है। डॉ. दंगल झाल्टे का मन्तव्य है – " प्रशासनिक कामकाज से संबन्धित वाक्य रचना, शब्द प्रक्रिया तथा कार्यालयीन पद्धति के निर्वाह स्वरूप उसमें आई तटस्थता आदि इस शैली में दृष्टिगोचर होती हैं।" 2 कुल मिलाकर साहित्यिक हिंदी तथा बोलचाल की हिंदी से इसका चरित्र और चेहरा अलग है।

3. व्यावसायिक हिंदी की शैली (Commercialized Hindi Style)

यह व्यापार एवं वाणिज्यिक क्षेत्रों में प्रयुक्त हिंदी भाषा का स्वरूप है। मुख्य रूप से बैंकों, बाज़ारों, मंडियों, व्यावसायिक विज्ञापनों, कंपनियों, आयात-निर्यात आदि से जुडे हुए भाषाई रूप है। इसमें निर्वयक्तिकता, आकर्षक भाषा शैली का

प्रयोग, आम जनता से संबन्धित होने के कारण भाषा में सरलता तथा स्पष्टता, वर्णनात्मकता की विशेषताएँ पाए जाते हैं।

4. तकनीकी हिंदी की शैली (Technical Hindi Style)

यह मुख्यत: विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी भाषा का स्वरूप है। विज्ञान, इंजीनियरी विज्ञान, चिकित्सा (Medical), कारखाना (Factory), अंतरिक्ष (Space) आदि के क्षेत्रों में हिंदी भाषा का यह रूप प्रचलित है। वस्तुनिष्ठता, अंतरराष्ट्रीय शब्दों की प्रधानता, तकनीकी प्रधानता, विशिष्ट चिह्नों और आरेखों का प्रयोग इस क्षेत्र की हिंदी भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

5. जनसंचारी हिंदी की शैली (Mass-Communication Hindi Style)

जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी भाषा का यह रूप मुख्य रूप से पत्रकारिता, टी.वी, रेडियो, विज्ञापन, सिनेमा, इन्टरनेट जैसे – फेसबुक (Face book), वाड्स एप (Whats App) आदि पर केंद्रित है। माध्यमानुरूपता, संदेशानुरूपता, सहजता, समय सीमा से प्रभावित भाषिक – संरचना, संप्रेषण शीलता, मानकीकरण आदि जनसंचारी हिंदी की शैली की मुख्य विशेषताएँ हैं।

6. परिवहन एवं पर्यटन क्षेत्र की हिंदी की शैली (Transport & Tourist Hindi Style)

यह शैली मुख्य रूप से परिवहन के विभिन्न माध्यमों जैसे – सड्क परिवहन, जलमार्ग, वायुयान, रेल और पर्यटन के क्षेत्रों में प्रयुक्त होते हैं। इसके आलावा हवाई अड्डा (Air Port), होटल और रेस्तरां (Hotel & Restaurant), इवेंट मैंनेजमेंट (Event Management) कैफे और पब (Café & Pub) के क्षेत्रों में भी यह शैली प्रचलित है। तकनीकी प्रधानता, अंग्रेज़ी शब्दों का भरमार, सामान्य बोलचाल के शब्द की विशेषताएँ भी इस शैली में पाए जाते हैं।

7. राजनीतिक क्षेत्र की हिंदी की शैली (Political Hindi Style)

राजनीति से जुड़े हिंदी की यह शैली, विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा उपयोग की जाती है। मुख्य रूप से चुनाव के दौरान अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है। इसमें विभिन्न राजनीतिक सिद्धान्तों, समाज विज्ञान, नागरिक विज्ञान, अर्थशास्त्र से जुडे हुए अनेक शब्दों का प्रयोग देख सकते हैं।

8. ग़ृह विज्ञान क्षेत्र की हिंदी की शैली (Home Science Hindi Style)

ग़ृह विज्ञान क्षेत्र की हिंदी की शैली घर वातावरण से जुडी हुई है। मुख्य रूप से रसोई घर (Kitchen), खाने पकाने की विधि / खाद्य नुस्खा (Food Recipe), कुकरी शो (Cookery Show), मसाले (Spices), घर की आवश्यक मदों की व्यवस्था जैसे क्षेत्रों में यह हिंदी प्रयुक्त की जाती हैं।

9. धार्मिक क्षेत्र की हिंदी की शैली (Religious Hindi Style)

हिंदी भाषा की यह शैली रूप मुख्य रूप से धार्मिक क्षेत्र से जुडी हुई है। धर्म से संबन्धित प्रभाषण, कहानी, भक्ति गीत, भजन, कीर्तन, शायरी, आरती में यह शैली देखी जा सकती है। इस शैली में संस्कृत शब्दों की समृद्धि, लय और ताल देख सकते हैं।

10 सामाजिक हिंदी की शैली (Socialized Hindi Style)

समाज के विभिन्न ज़रूरतों की पूर्ति के लिए जिस हिंदी का प्रयोग किया जाता है वह सामाजिक हिंदी की शैली हैं। इसको 'बोलचाल की हिंदी ' कहना भी समीचीन है। हिंदी-अंग्रेजी मिश्रित शैली, मुंबई हिंदी, पंजाबी हिंदी, कलकतिया हिंदी, कन्नड़ हिंदी, चेन्नई हिंदी, तेलुगू हिंदी, मलयाली हिंदी, निकोबारी हिंदी, नेपाली हिंदी, मॉरीशस हिंदी, फिजी हिंदी, सुरिनम हिंदी, अफ्रीकी हिंदी आदि इसके कुछ भेदों का नाम हैं।

उपसंहार

उपर्युक्त क्षेत्रों के अलावा, हिंदी भाषा अन्य अनेक क्षेत्रों में भी प्रयुक्त होते हैं। इस अध्ययन के द्वारा मैं यह सिद्ध करना चाहता हूँ कि – आज हिंदी भाषा साहित्य से लेकर सामान्य वातावरण तक अपनी गरिमामय अभिव्यक्ति को लेकर विराजमान है। यह हिंदी भाषा के व्यापक व्यवहार क्षेत्र का एक स्पष्ट प्रमाण हैं। वस्तुत: आज विश्व में वैज्ञानिक तथा तकनीकी उन्नति के सथ हिंदी भाषा के प्रयोजनीय पक्ष का महत्व भी बढ़ गया है। यही उम्मीद है।

संदर्भ सूची

1. साहित्य प्रभा, वर्ष:7, अंक: 1,जनवरी – मार्च 2008, पृ – 48-49 ।
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग, डॉ.दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ – 68 ।